शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

युधिष्ठिर शर्मा* और प्रो. ईना शास्त्री**

सारांश

समाज में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। योग्य नागरिकों के निर्माण का दायित्व शिक्षक पर है। इसलिये शिक्षक का व्यक्तित्व आदर्श तथा मानववादी होना चाहिए। इस हेतु शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की शैक्षिक गतिविधियों व पाठ्यक्रम में मानव मूल्यों की शिक्षा को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए। इसी को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्ता द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों (महिला व पुरुष) की मानवता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। शोध का मुख्य उद्देश्य महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्ता द्वारा अध्ययन की सर्वेक्षण विधि का चुनाव किया गया है। न्यादर्श हेतु 100 प्रशिक्षणार्थियों (50 महिला व 50 पुरुष) का चयन किया गया है तथा आंकड़ों का संकलन करने हेतु स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है। इस उपकरण से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है तथा निष्कर्ष रूप में प्राप्त किया है कि लिंग व क्षेत्र के आधार पर शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं होता है।

प्रस्तावना

प्राचीन समय में शिक्षा को प्रकाश का स्त्रोत, अन्तर्दृष्टि, अन्तर्ज्योति, ज्ञान चक्षु माना जाता था। शिक्षा के द्वारा ही बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। बालक जन्म से लेकर अन्तिम समय तक परिवार, पड़ौस वातावरण, विद्यालय आदि स्त्रोतों से शिक्षा प्राप्त करता रहता है, जिससे बालक में विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोणों का विकास होता है। समाज, राष्ट्र तथा मानवता के प्रति अभिवृत्तियों का निर्माण होता है। इन अभिवृत्तियों को विकसित करने तथा राष्ट्र के लिये आदर्श नागरिक तैयार करने का उत्तरदायित्व शिक्षक पर होता है।

एक योग्य तथा कुशल शिक्षक ही बालक का उचित मार्गदर्शन कर सकता है। कुशल शिक्षक में एक नहीं, अनेक गुण होने चाहिएं। शिक्षकों को कुशल तथा प्रभावी बनाने के लिये प्रशिक्षण की आवश्यकता महसूस की जाती है। प्रशिक्षण से तात्पर्य, उस विशेष अभ्यास से है, जो कि विशेष कौशल में प्रवीणता प्राप्त करने के लिये आवश्यक है।

देश में हर जगह भ्रष्टाचार पनप रहा है, जिसका मूल कारण आये दिन सम्प्रदायिक दंगे, जातिवाद की लड़ाई जहां तक कि मनुष्य, मानवता को भी खो बैठा है और शिष्टाचार की जगह भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहा है। इसका मूल कारण अशिक्षा एवं प्रशिक्षित कुशल शिक्षकों का अभाव है।

शोधकर्त्ता ने इसी बात को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन हेतु ''शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' शीर्षक का चुनाव किया है।

मानवता की भावना के अन्तर्गत मानव को महत्व दिया जाता है तथा यह देश, प्रजाति, धर्म, लिंग, आर्थिक स्थिति अथवा विद्वता या कौशल के आधार पर मनुष्यों के भेदभाव का विरोध करता है।

मानवता की अवधारणा के सम्बन्ध में विद्वानों ने अपनी–अपनी परिभाषाएँ दी हैं, मानवता के संबंध में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था, ''पर सेवा, पर सहायता अपने हितार्थ कर्म करना ही पूजा है और यही हमारा धर्म है यही हमारी इंसानियत है।''

प्रो. क्रेन ब्रिण्टन के अनुसार, ''मानवता जीवन के प्रति वह रुख है, जो जनतंत्र के उस पक्ष के साथ मूलतः सामंजस्य स्थापित करता है, जिसका संबंध सामान्य मनुष्य अर्थात् जनसमूहों के कल्याण से है।''

मानवता के अर्थ एवं परिभाषाओं की विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि मानवता मूलतः मानव केन्द्रित अवधारणा है, जिसमें मानव तथा उसकी समस्याओं को अधिक महत्व दिया जाता है। अतः मानवता से अभिप्राय

*शोधार्थी, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राजस्थान)
**निर्देशिका, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राजस्थान)

मानव की स्वतन्त्रता, समानता, मानवाधिकार, न्याय तथा विश्व बन्धुत्व की भावना के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना है।

समस्या अभिकथन

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

शोध का औचित्य

देश में व्याप्त अराजकता तथा भ्रष्टाचार को मिटाने तथा मानवता के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करने में प्रस्तुत शोध की अपनी महत्ता है। इसलिये मेरे शोध द्वारा अपने अध्ययन में शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है क्योंकि शिक्षक ही देश के भविष्य निर्माताओं (छात्र–छात्राओं) को उचित मार्गदर्शन प्रदान करता है और देश को कुशल व सुदृढ़ बनाता है।

वर्तमान समय में मानव में मानवता समाप्त होती जा रही है। ईर्ष्या और द्वेष की भावना के कारण मानव मूल्यों का पतन हो रहा है। आधुनिकीकरण, भौतिक उन्नति तथा मानव मूल्यों में गिरावट आदि मानवता के विकास में बाधाएँ उत्पन्न करने वाले मुख्य कारक हैं। मानवता की भावना का विकास तभी सम्भव है, जब व्यक्ति मानव मूल्यों के महत्व को समझेगा तथा इन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाएगा। मानवता की भावना का विकास करने तथा उसे मानव मूल्यों के महत्व से परिचित करवाने के लिये शिक्षा तथा शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है। देश के भावी शिक्षकों अथवा शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति को समझने तथा इस हेतु उन्हें जागरुक करने में इस शोध की अपनी महत्ता है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों का विवरण निम्नानुसार है :–

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत शहरी प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता ने उद्देश्यों पर आधारित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया है, जिनका वर्णन निम्न प्रकार से है :–

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में श्रीगंगानगर जिले के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत 100 प्रशिक्षणार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है। इसमें 50 पुरुष प्रशिक्षणार्थियों तथा 50 महिला प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया है, जिसमें से 25–25 महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थी ग्रामीण क्षेत्र से तथा 25–25 महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थी शहरी क्षेत्र से लिये गये हैं।

उपकरण

इस शोध के अन्तर्गत आंकड़ों का संकलन करने के लिये शोधकर्त्ता द्वारा 'स्वनिर्मित मानवता के प्रति अभिवृत्ति मापनी' का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–मूल्य परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण

सारणी संख्या – 1

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाती सारणी

क्र. सं.	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
1.	महिला	50	68.35	8.13	1.04	सार्थक अन्तर नहीं है
2.	पुरुष	50	70.15	9.17		

व्याख्याः– उपरोक्त सारणी द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के आंकड़ों का मध्यमान क्रमशः 68.35 व 70.15 तथा मानक विचलन क्रमशः 8.13 व 9.17 प्राप्त हुआ है तथा टी–मूल्य 1.04 प्राप्त हुआ है, जो सारणी के मान से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। अतः सम्बन्धित शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी संख्या – 2

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाती सारणी

क्र. सं.	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
1.	महिला	50	66.55	9.25	0.80	सार्थक अन्तर नहीं है
2.	पुरुष	50	67.07	9.77		

व्याख्या :– उपरोक्त सारणी द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के ग्रामीण क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के आंकड़ों का मध्यमान क्रमशः 66.55 व 67.07 तथा मानक विचलन क्रमशः 9.25 व 9.77 प्राप्त हुआ है तथा टी–मूल्य 0.80 प्राप्त हुआ है, जो सारणी के मान से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के ग्रामीण क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। अतः सम्बन्धित शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी संख्या – 3

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति को दर्शाती सारणी

क्र. सं.	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
1.	महिला	50	70.23	8.31	1.06	सार्थक अन्तर नहीं है
2.	पुरुष	50	72.13	9.58		

व्याख्याः– उपरोक्त सारणी द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शहरी क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के आंकड़ों का मध्यमान क्रमशः 66.55 व 67.07 तथा मानक विचलन क्रमशः 9.25 व 9.77 प्राप्त हुआ है तथा टी–मूल्य 0.80 प्राप्त हुआ है, जो सारणी के मान से कम है, जिससे स्पष्ट होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शहरी क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। अतः सम्बन्धित शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

सांख्यिकीय विश्लेषणा के आधार पर प्राप्त परिणामों से जो निष्कर्ष निकाले गये हैं, उनका वर्णन इस प्रकार है :–

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 1 स्वीकृत होती है, क्योंकि दोनों ही प्रकार के प्रशिक्षणार्थियों को महाविद्यालय द्वारा एक

समान वातावरण साधन व सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जाती हैं।

2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 2 स्वीकृत होती है क्योंकि दोनों ही प्रकार के प्रशिक्षणार्थियों को समान शैक्षिक तथा पारिवारिक वातावरण मिलता है।

3. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की मानवता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 3 स्वीकृत हुई है क्योंकि दोनों प्रकार के प्रशिक्षणार्थियों को समान शैक्षिक वातावरण साधन व सुविधाएँ मिलती हैं, उनका पारिवारिक वातावरण भी लगभग समान होता है।

संदर्भ सूची

अग्निहोत्री (2003), रविन्द्र, आधुनिक भारतीय शिक्षा : समस्या और समाधान

कश्यप, सुभाष (1999), भारतीय राजनीति और संविधान विकास विवाद और निदान, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

कोठारी, रजनी, स्टेट अगेंस्ट डेमोक्रेसी, दिल्ली, अजन्ता पब्लिकेशन

तरूण, हरिवंश (2000), भारत की राष्ट्रीय एकता और अखण्डता, दिल्ली, ग्रंथ लोक प्रकाशन

दीक्षित, प्रभा (1980), साम्प्रदायिकता की ऐतिहासिक संदर्भ भूमिका, दिल्ली, दि मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड

दीक्षित, चन्द्रोदय (1984), मानववादी विचारक, इलाहाबाद, लोक भारती प्रकाशन

दूबे, अक्षय कुमार (1993) साम्प्रदायिकता के स्रोत, दिल्ली, विनय प्रकाशन

दत्ता, के. (1978), भारत का आधुनिक इतिहास, पटना, इण्डियन प्रेस

पीयूष, जगदीश (2008), गांधी, गांधी, गांधी, नई दिल्ली, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन

भार्गव, महेश (2007), आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण मापन एच.पी., आगरा, भार्गव बुक हाउस

भर्तृहरि, मिश्र, विजयशंकर (1998), नीतिशतकम् चौखंबा संस्कृत सीरिज ऑफिस, वाराणसी

राजस्थान पत्रिका (17 दिसम्बर 2012), वोट बैंक की फसल

राजस्थान पत्रिका (17 दिसम्बर 2012), हिंसक लपटें

शर्मा, माहेश्वरी (2003), विद्यालय प्रबंध, मेरठ, सूर्या पब्लिकेशन

शर्मा, जयश्री (1983–88, वॉल्युम– I) एटिट्यूड ऑफ टीचर एण्ड पैरेन्टस् टुवार्डस मोरल एजूकेशन, थ्वनतजी नतअमल वम्किनण त्मेमंतबी

सारस्वत, आनंद प्रकाश (1991) साम्प्रदायिकता और राष्ट्रीयकरण, नई दिल्ली, समरूप एण्ड संस

सेठ नलिन (2011) भारत में दलित राजनीति : उदय विकास एवं प्रभाव, नई दिल्ली, अल्फा पब्लिकेशन्स

हिन्दुस्तान (25 अगस्त 2012), नाजुक मौकों पर नाकाम सियासत